Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre Volume 07, Issue 01

DOI: 10.46523/jarssc.07.01.15
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

युवाओं पर मीडिया हिंसा का मनोवैज्ञानिक प्रभाव

नवीन सिंह

शोध छात्र मनोविज्ञान विभाग

का. सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय अयोध्या (फैजाबाद)

प्रो० प्रणय कुमार त्रिपाठी

मनोविज्ञान विभाग का० सु० साकेत पी० जी० कॉलेज अयोध्या (उ०प्र०)

सारः

यह शोध पत्र युवाओं पर मीडिया हिंसा के मनोवैज्ञानिक प्रभाव की जांच करता है। यह पेपर विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालता है जैसे मीडिया हिंसा की परिभाषा, विभिन्न मीडिया रूपों में इसकी व्यापकता, इसके प्रभाव को समझने के लिए उपयोग किए जाने वाले सैद्धांतिक ढांचे, इसके प्रभावों का समर्थन करने वाले अनुभवजन्य साक्ष्य और युवा विकास के लिए निहितार्थ। मौजूदा साहित्य के व्यापक विश्लेषण के माध्यम से, इस पेपर का उद्देश्य इस बात की गहरी समझ में योगदान करना है कि मीडिया हिंसा का संपर्क युवा व्यक्तियों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और व्यवहारिक विकास को कैसे प्रभावित करता है।

मुख्य शब्दः युवाओं, मीडिया, हिंसा, मनोवैज्ञानिक, प्रभाव

परिचय

आज के डिजिटल युग में, जहां मीडिया उपभोग दैनिक जीवन का एक सर्वव्यापी हिस्सा है, युवाओं पर मीडिया हिंसा के प्रभाव के बारे में चिंताएं तेजी से प्रमुख हो गई हैं। फिल्मों, टेलीविजन शो, वीडियो गेम और ऑनलाइन सामग्री जैसे मीडिया के विभिन्न रूपों में हिंसा के चित्रण ने युवा व्यक्तियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण और व्यवहार पर इसके प्रभावों के बारे में सवाल उठाए हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य मीडिया हिंसा के संपर्क और युवाओं पर इसके मनोवैज्ञानिक प्रभावों के बीच जटिल संबंधों का पता लगाना और उनका विश्लेषण करना है।

युवाओं पर मीडिया हिंसा का मनोवैज्ञानिक प्रभाव एक जटिल और बहुआयामी मुद्दा है जिसने शोधकर्ताओं, नीति निर्माताओं और आम जनता का महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित किया है। पिछले कुछ दशकों में,

Received:01 ,.05.2024 **Accepted:** 20.05.2024 **Published**: 20.05.2024

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre Volume 07, Issue 01

DOI: 10.46523/jarssc.07.01.15
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

टेलीविजन, फिल्में, वीडियो गेम और इंटरनेट सहित विभिन्न मीडिया प्लेटफार्मों के तेजी से प्रसार और पहुंच ने युवा व्यक्तियों के व्यवहार और मानसिक स्वास्थ्य पर उनके संभावित प्रभाव के बारे में चिंताएं बढ़ा दी हैं। यह परिचय इस विषय के प्रमुख पहलुओं को समझने के लिए मंच तैयार करता है, जिसमें मीडिया मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से बच्चों के व्यवहार और मानसिक स्वास्थ्य पर मीडिया हिंसा के प्रभाव, बच्चों और किशोरों की आक्रामकता पर प्रभाव और समाज के लिए व्यापक निहितार्थ शामिल हैं।

युवाओं पर मीडिया हिंसा के मनोवैज्ञानिक प्रभाव की खोज 20वीं सदी के मध्य में हुई जब विद्वानों और मनोवैज्ञानिकों ने हिंसक मीडिया सामग्री के संपर्क और बच्चों में आक्रामक व्यवहार के बीच संभावित संबंधों की जांच शुरू की। प्रारंभिक अध्ययन, जैसे कि बंडुरा (1961) और बर्कोविट्ज (1965) द्वारा किए गए, ने सामाजिक शिक्षण सिद्धांत और व्यवहार को आकार देने में अवलोकन संबंधी शिक्षा की भूमिका को समझने के लिए आधार तैयार किया। इन मौलिक कार्यों में इस बात पर प्रकाश डाला गया कि कैसे बच्चे आक्रामक और हिंसक कार्यों सहित मीडिया में देखे जाने वाले व्यवहारों की नकल कर सकते हैं, जिससे संभावित नकारात्मक परिणामों के बारे में चिंताएं पैदा हो सकती हैं।

मनोवैज्ञानिक प्रभाव की गहराई में जाने से पहले, यह परिभाषित करना महत्वपूर्ण है कि मीडिया हिंसा क्या है। मीडिया हिंसा से तात्पर्य मीडिया के विभिन्न रूपों में शारीरिक क्षति, आक्रामकता या हिंसक व्यवहार के चित्रण से है, जिसमें टेलीविजन शो, फिल्में, वीडियो गेम, ऑनलाइन सामग्री और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म शामिल हैं, लेकिन यह इन्हीं तक सीमित नहीं है। इस परिभाषा में सामग्री की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है, हिंसा के स्पष्ट दृश्यों से लेकर अधिक सूक्ष्म चित्रण तक जो आक्रामकता का महिमामंडन करते हैं या संघर्ष समाधान के साधन के रूप में हिंसक व्यवहार को सामान्य बनाते हैं।

विभिन्न मीडिया रूपों में मीडिया हिंसा की व्यापकता

मीडिया हिंसा की व्यापकता टेलीविजन, फिल्में, वीडियो गेम और ऑनलाइन सामग्री सहित मीडिया के विभिन्न रूपों में भिन्न–भिन्न है। इनमें से प्रत्येक मीडिया स्वरूप के बारे में कुछ अंतर्दृष्टियाँ यहां दी गई हैं:

टेलीविजनः टेलीविजन ऐतिहासिक रूप से मीडिया हिंसा को उजागर करने का एक महत्वपूर्ण स्रोत रहा है, खासकर बच्चों और किशोरों के लिए। शोध से पता चला है कि कार्टून और प्राइम–टाइम शो सहित कई कार्यक्रमों में अलग–अलग स्तर की हिंसक सामग्री होती है। बच्चों की प्रोग्रामिंग की, विशेष रूप से,

Received:01 ,.05.2024 **Accepted:** 20.05.2024 **Published**: 20.05.2024

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre Volume 07, Issue 01

DOI: 10.46523/jarssc.07.01.15
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

यथार्थवादी परिणामों के बिना एक मानक व्यवहार के रूप में हिंसा के चित्रण के लिए आलोचना की गई है।

फिल्में: फिल्में भी हिंसा का चित्रण करती हैं, जिसमें एक्शन से भरपूर दृश्यों से लेकर युद्ध और अपराध के ग्राफिक चित्रण तक शामिल हैं। फिल्मों में हिंसा की व्यापकता वास्तविक जीवन में हिंसा के बारे में दर्शकों की धारणाओं को प्रभावित कर सकती है, खासकर जब इसे अन्य मीडिया और सामाजिक कारकों के साथ जोड़ा जाता है।

वीडियो गेम: वीडियो गेम ने हिंसा के चित्रण के संबंध में महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित किया है। कई वीडियो गेम में उनके गेमप्ले यांत्रिकी के हिस्से के रूप में हिंसा के तत्व शामिल होते हैं, जैसे शूटिंग, लड़ाई, या युद्ध सिमुलेशन। वीडियो गेम की इंटरैक्टिव प्रकृति हिंसक सामग्री के प्रभाव को बढ़ा सकती है, जिससे खिलाड़ियों में असंवेदनशीलता और आक्रामक व्यवहार के बारे में चिंताएं पैदा हो सकती हैं।

ऑनलाइन सामग्री: डिजिटल प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया के उदय के साथ, ऑनलाइन सामग्री मीडिया एक्सपोजर का एक प्रमुख स्रोत बन गई है। इसमें वीडियो, मीम्स और अन्य उपयोगकर्ता–जनित सामग्री शामिल है जिसमें हिंसक विषय या कल्पना शामिल हो सकती है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म स्ट्रीमिंग सेवाओं की भी मेजबानी करते हैं जो हिंसक और अहिंसक दोनों विकल्पों सहित सामग्री की एक विस्तृत श्रृंखला पेश करते हैं।

मीडिया हिंसा की व्यापकता उपभोक्ताओं, विशेषकर बच्चों और किशोरों के बीच महत्वपूर्ण विश्लेषण और मीडिया साक्षरता कौशल की आवश्यकता को रेखांकित करती है। शोधकर्ता इसके निहितार्थ को बेहतर ढंग से समझने और मीडिया विनियमन और शिक्षा प्रयासों को सूचित करने के लिए व्यवहार, दृष्टिकोण और मानसिक स्वास्थ्य पर मीडिया हिंसा के प्रभावों का अध्ययन करना जारी रखते हैं।

युवाओं पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव

युवाओं पर सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभावों में शामिल हो सकते हैं:

कनेक्टिविटी: सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म युवाओं को दोस्तों और परिवार से जुड़ने की अनुमति देते हैं, खासकर उन लोगों से जो भौगोलिक रूप से दूर हैं। यह कनेक्टिविटी रिश्तों को मजबूत कर सकती है और भावनात्मक समर्थन प्रदान कर सकती है।

Received:01 ,.05.2024 **Accepted:** 20.05.2024 **Published**: 20.05.2024

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre Volume 07, Issue 01

DOI: 10.46523/jarssc.07.01.15
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

सूचना साझा करनाः सोशल मीडिया सूचना और ज्ञान साझा करने का एक शक्तिशाली उपकरण है। युवा शैक्षिक सामग्री, समाचार अपडेट और मूल्यवान संसाधनों तक पहुंच सकते हैं जो उनके सीखने के अनुभव को बढ़ा सकते हैं।

रचनात्मकता और अभिव्यक्तिः इंस्टाग्राम, टिकटॉक और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म युवाओं को कला, संगीत, वीडियो और सामग्री निर्माण के अन्य रूपों के माध्यम से अपनी रचनात्मकता व्यक्त करने का अवसर प्रदान करते हैं। यह नवीनता और आत्म–अभिव्यक्ति को बढ़ावा देता है।

सामुदायिक निर्माणः सोशल मीडिया युवाओं को साझा रुचियों, शौक या कारणों के आधार पर समुदायों को खोजने और उनमें शामिल होने में सक्षम बनाता है। अपनेपन की यह भावना आत्मसम्मान को बढ़ा सकती है और सहयोग और नेटवर्किंग के अवसर प्रदान कर सकती है।

जागरूकता और सक्रियताः सोशल मीडिया सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने, सक्रियता को बढ़ावा देने और युवाओं को सार्थक कारणों और आंदोलनों में भाग लेने के लिए प्रेरित करने में सहायक रहा है।

करियर के अवसरः सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म युवाओं को अपनी प्रतिभा, कौशल और उपलब्धियों को प्रदर्शित करने के अवसर प्रदान करते हैं, जिससे प्रभावशाली विपणन, डिजिटल सामग्री निर्माण और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में करियर के अवसर मिल सकते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य सहायताः कुछ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों के लिए संसाधन और सहायता प्रदान करते हैं, जैसे ऑनलाइन समुदाय, हेल्पलाइन और मानसिक कल्याण के बारे में जानकारी। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि हालांकि सोशल मीडिया के ये सकारात्मक पहलू हैं, लेकिन युवाओं के लिए इन प्लेटफार्मों का जिम्मेदारी से उपयोग करना और साइबरबुलिंग, गोपनीयता संबंधी चिंताओं और गलत सूचना जैसे संभावित जोखिमों के बारे में जागरूक रहना आवश्यक है।

युवाओं पर सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव

युवाओं पर सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव महत्वपूर्ण चिंता और अध्ययन का विषय है। आपके शोध पत्र पर विचार करने के लिए यहां कुछ मुख्य बिंदु दिए गए हैं:

Received:01 ,.05.2024 **Accepted:** 20.05.2024 **Published**: 20.05.2024

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre Volume 07, Issue 01

DOI: 10.46523/jarssc.07.01.15
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

मानसिक स्वास्थ्य के मुद्देः सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग विभिन्न मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों जैसे चिंता, अवसाद, अकेलापन और कम आत्मसम्मान से जुड़ा हुआ है। दूसरों के आदर्श दिखने वाले जीवन के साथ लगातार तुलना अपर्याप्तता और असंतोष की भावनाओं में योगदान कर सकती है।

साइबरबुलिंगः सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म साइबरबुलिंग के लिए प्रजनन स्थल हो सकते हैं, जहां व्यक्ति, विशेष रूप से युवा, ऑनलाइन उत्पीड़न, धमकी या अपमान का अनुभव करते हैं। इसके गंभीर मनोवैज्ञानिक परिणाम हो सकते हैं और मानसिक स्वास्थ्य पर असर पड़ सकता है।

नींद में खललः देर रात सोशल मीडिया का उपयोग नींद के पैटर्न को बाधित कर सकता है, जिससे नींद की कमी और संबंधित स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। जुड़े रहने की निरंतर आवश्यकता और छूट जाने का डर इस व्यवहार में योगदान कर सकता है।

लत और व्याकुलताः सोशल मीडिया की लत युवाओं में बढ़ती चिंता का विषय है, जिससे उत्पादकता में कमी, खराब शैक्षणिक प्रदर्शन और वास्तविक जीवन में सामाजिक संपर्क में कठिनाइयाँ हो रही हैं। लाइक, टिप्पणियों और शेयरों के माध्यम से सत्यापन की निरंतर आवश्यकता लत बन सकती है।

नकारात्मक शारीरिक छविः सोशल मीडिया पर आदर्श और अवास्तविक शारीरिक छवियों के संपर्क में आने से युवा लोगों, विशेषकर लड़कियों में शारीरिक असंतोष और खाने संबंधी विकारों में योगदान हो सकता है। इससे किसी के शरीर के प्रति अस्वास्थ्यकर व्यवहार और दृष्टिकोण हो सकता है।

गोपनीयता और सुरक्षा संबंधी चिंताएँः युवा अनजाने में व्यक्तिगत जानकारी ऑनलाइन साझा कर सकते हैं, जिससे गोपनीयता का उल्लंघन, पहचान की चोरी और साइबर शोषण हो सकता है। ऑनलाइन सुरक्षा और गोपनीयता सेटिंग्स के बारे में जागरूकता की कमी उन्हें जोखिम में डाल सकती है।

सामाजिक तुलना और दबावः सोशल मीडिया तुलना की संस्कृति को बढ़ावा देता है, जहां युवा सामाजिक प्लेटफार्मों पर जो देखते हैं उसके आधार पर एक निश्चित छवि या जीवनशैली बनाए रखने के लिए दबाव महसूस करते हैं। इससे तनाव, चिंता और निरंतर प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा हो सकती है।

वास्तविकता की विकृत धारणाः सोशल मीडिया पर क्यूरेटेड और फिल्टर की गई सामग्री वास्तविकता की विकृत धारणा पैदा कर सकती है, जिससे युवा अवास्तविक मानकों और अपेक्षाओं पर विश्वास कर सकते हैं। इससे उनके आत्म–मूल्य और खुशी की भावना पर असर पड़ सकता है।

Received:01 ,.05.2024 **Accepted:** 20.05.2024 **Published**: 20.05.2024

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre Volume 07, Issue 01

DOI: 10.46523/jarssc.07.01.15
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

इन नकारात्मक प्रभावों को संबोधित करके, आपका शोध सोशल मीडिया और युवा कल्याण के बीच जटिल संबंधों को समझने और प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के लिए रणनीतियों की जानकारी देने में योगदान दे सकता है।

निष्कर्ष

अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार, हिंसा की टीवी रिपोर्टों के प्रचार से युवाओं की बौद्धिक फिटनेस पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। हिंसा की खबरों पर जनता की प्रतिक्रिया ऐसे कवरेज की श्रेष्ठता से पीड़ित है। टीवी पर बार–बार इसका सामना करने के बाद समाचार देखने वाले कुछ दर्शक हिंसा के प्रति असंवेदनशील हो जाते हैं या इसके प्रति लालायित हो जाते हैं। कुछ लोग समाचार देखने से दूर रहते हैं क्योंकि हिंसा का नियमित चित्रण संभवतः निराशाजनक है। जब लोग टीवी समाचारों पर दिखाए गए हिंसक दृश्यों को देखते हैं, तो वे असुरक्षित महसूस करते हैं और अपने घर छोड़ने से डरते हैं। नतीजतन, मीडिया हिंसक सूचना कहानियों की सुरक्षा के लिए एक नई तकनीक की खोज करना चाहता है, क्योंकि ऐसा करने से उसके लक्षित बाजार के लिए जोखिम पैदा होता है। दर्शकों पर सीधा मानसिक प्रभाव पड़ता है।

संदर्भ

कॉयने, एस.एम. (2016) किशोरों में आक्रामक व्यवहार पर टेलीविजन पर संबंधपरक आक्रामकता देखने का प्रभावः एक तीन साल का अनुदैर्ध्य अध्ययन। विकासात्मक मनोविज्ञान, 52(2), 284.

थॉमस, के. एम. (2016) हिंसक और अहिंसक–गेम खिलाड़ियों में हिंसक वीडियो गेम खेलने के दौरान विभेदक तंत्रिका भर्ती। लोकप्रिय मीडिया संस्कृति का मनोविज्ञान, 5(1), 39.

ब्रॉकमायर, जे.एफ. (2015) हिंसक वीडियो गेम खेलना और हिंसा के प्रति असंवेदनशीलता। बाल एवं किशोर मनोरोग क्लिनिक, 24(1), 65–77

एल. एच., और एट अल. (2001) बच्चों में शारीरिक गतिविधि और टेलीविजन देखने पर आकस्मिक टेलीविजन का प्रभाव। बाल चिकित्सा, 107(5), 1043–1048।

एंडरसन, सी. ए., और डिल, के. ई. (2000) वीडियो गेम और प्रयोगशाला और जीवन में आक्रामक विचार, भावनाएं और व्यवहार। जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 78, 772–790।

Received:01 ,.05.2024 **Accepted:** 20.05.2024 **Published**: 20.05.2024

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.